(मलयालम से अनूदित)

छोटी रब्बी*

- डॉ. रतीष कृष्णा

अनुवाद : डा.श्रीराधाशारदा

एक

चीरू, जो मेरी घरेलू बिल्ली
मेरे लिए छोटी रब्बी है ।
कभी-कभी तो मैं हूँ
पालतू-मानव उसका भी ।

दो

नदी में-
मेरी प्रियतमा सहित नहाते वक्त
उसने मुझे दिखा दिए अपने
लचकदार नुकीले नाखून।
मैं ने भी जूते उतारकर
दिखा दिए अपने खुर ।

चाटकर जाते वक्त
उसने मुझे दी.....
एक नन्ही-सी बिल्ली ।

मेरे एकाकीपन के वो क्षण
बडे ही तीक्ष्ण एवं सख्त थे ।
एकांत विजन एवं तबाह -
जहाज़ ही मेरे अड्डे थे ।
उन जहाज़ों में छिपे-छिपे
मैंने अपने दिन बिताये ।
अवसाद की अंगूरी
एवं आकुलता का पूआ
मात्र ही तब मेरी रोटी थी।
धूली-धूसरित एवं सूखी
राहों से भटककर मैंने
करुणा की भीख माँगी ।

चित्रकथाओं में अकसर
राजकुमारी का भिखारी से
इश्क होता दिखाई पड़ता है,
लेकिन ज़िदगी में बात
उल्टी है कि पहरेदार
भिखारी को दूर भगा देते हैं।

कमर के नीचे निर्जीव पड़ी बिल्ली
मेरे पैरों में रगड़ती है ।
मैंने उसे अपने बाँहों ले लिया -
रे करुणामय प्रभो,
तेरे इस अर्ध-थकित प्यार को

मैं ह्रदय से लगाता हूँ।

तीन

वर्षों बाद घर वापस आये

बेटे की कमाई केवल

काली-सफ़ेद रंगवाली एक

नन्ही बिल्ली मात्र है -

यह जानकर माँ मुसकुराई ।

बेटे की वापसी पर माँ की

आँखों में सद्यःप्राप्त जैसी-

उत्कण्ठा नहीं थी , बल्कि

सिर्फ मातृवात्सल्य की काँति

मात्र ही झलक पड़ी ।

अकिंचन लोग अपने बच्चों के लिए

पूरी कमाई खर्च करते हैं ।

दिन-रात वहाँ ज़ारी रहती है

त्योहारों की उमंग ।

गरम-गरम पुलाव व मीठी-मीठी

खीर की वह सुगंध बाड़ लाँघकर

जूही की लता के फ़ैलाव-सी फ़ैली रही।

उन्होंने अपनी संतानों को वापस बुलाया ।

आते वक्त वे माँ-बाप के लिए

एक भेड़, बछड़ा, मुर्गा आदि

तोफ़े अवश्य साथ लाये।

लेकिन , शहरों से रेड़ियो के सिवा

वे और कुछ भी साथ न लाये ।

चार

छोटी रब्बी बीच-बीच में

वल्मीक की ओर उतरती रही ।

मैंने अपने दंष्ट्रों से उन

वल्मीकों को तोड दिया ।

सिर भीतर घुसेड़कर

दोहरी-जीभ से अन्तर्मिट्टी छू ली ।

प्राचीन पशु की गंधवाले

मेरे हाथ अन्दर की ओर.....

हाथों में खून -

नाखूनों में पुलीस द्वारा

आपातकाल में धंसाये गये

बिगाड़े कील।

हाथों में खून -

सर्पदंश के फ़ोड़े

गर्दन पर ज्ञान की जकड़बंदी ।

हाथों में खून -

खून में (तू) मृगतृष्णा

दाँतों में गरल की नीलिमा

चुंबन से बिछुड़ जाता हूँ मैं.....

मानव रेंगता रहता है ।

वल्मीकों में खोजता फ़िरता है ।

हे रब्बी ,कहाँ है तू.....

मुझ ज़हरीले-जीव को

ज़रूर कोई मार डालेगा !

उसके पहले तेरी पूँछ पकड़के

मैं बाहर खींचूँ ।

रब्बी-

मैं अनाथ हूँ

(रोता है)

पाँच

एक बार पानी बरसा ।

तब हम दालान आ बैठे

“माँ , क्यों ऐसी एक असाधारण वर्षा ?”-

मैंने पूछा ।

“ यह वर्षा का ही मौसम है बेटा ? ” माँ ने प्रत्युत्तर दिया ।

वर्षा, गर्मी और वसंत की ऋतुएँ

भटकते तीर्थयात्रियों जैसी

हमारी ओर आवागमन करती रहीं ।

किसी बर्फीले मौसम में

पूर्वाधिक दैवीकता से

छोटी रब्बी के पिछले पैरों का

पुनरुत्थान हुआ ।

वह फुरती से एक पेड़ पर चढ़ी ।

मैं भी चढ़ा , पर गिर पड़ा , इसलिए कि-

मेरे पैर कमलदल जैसे मुलायम थे ।

फिर भी छाती घिसके मैं ऊपर चढ़ा ।

कड़ी लू में हम पेड़-से-पेड़

उछलते-कूदते रहे ।

हवा में कलाबाजी करते रहे ।

टहनियों पर झूला झूलते फ़िरे ।

माँ कह रही थी कि हमें पकड़के

सरकस भिजवा देंगी ।

नीचे चरते रहे धवल मेघों में

रगडते हुए मैंने पूछा :

“रब्बी, हमें सरकस में बहुत कुछ करना पड़ेंगे न! ”

“ नहीं.....नहीं.....मैं कभी भी किसी के कब्जे में आ ही नहीं सकती ।”

कहकर वह हाथ जोड़ी।

फिर चार पैरों के बल पर ज़मीन आ गिरी ।

मैं अपने हाथ फ़ैलाके

टीले की ढ़लान पर उड़ता रहा ।

चट्टानों के बीच से

छोटी रब्बी को अपने चंगुल में लेकर

मैं पहाड़ी के ऊपर की ओर गया.....

छः

ध्यान,नाश्ता एवं सुरापान के पश्चात्

हम पहाड़ी उतरते हैं

और षेक्स्पियर का एक नाटक

देखने जाते हैं।

रब्बी मेरे कंधे पर

दुपहर की झपकी में है ।

मैं नायिकाओं की 'कटाऊट ' की ओर

एकटक ताकता रहा ।

"या तो बिल्ली, नहीं तो तुम।

केवल एक ही मात्र

नाटक देख सकें "- कहते हुए

वहाँ एक ने टिकट दिये बिना

हमारी हँसी उड़ायी ।

यह कैसी विड़ंबना है ! !

कहाँ दायित्व निभाते अधिकारी !

कहाँ उपयोक्ता हित व्ववहार !

कृतज्ञता ज्ञापन की मान्यता कहाँ !

अब यही करणीय है -

गुंड़ा-नियम या देशद्रोह लगाकर

बिना विचारण, इन्हें बंदी बनाएँ.....

मैं थियेटर के अंदर की ओर दृष्टि ड़ाली

वहाँ न्यायाधीश का घोड़ा पेशाब करता है ।

एक युवति अपने पति के निकट

अजगर से गले लगा रही है ।

एक हट्टे-कट्टे आदमी का कुत्ता

छोटी रब्बी की ओर देख गुर्राता है।

हम वहाँ गये जहाँ भीड़ एक दलित को

पीट-पीटकर मार रही है ।

वहाँ नकली वर्षा बरसाकर

सारे पदछाप मिटाये गये थे ।

चाहे वह दलित भूखा हो या

चाहे किसी से मुहब्बत हुई हो ।

एक चट्टान का टुकडा मात्र

उसकी खून से सना काँप उठा और

'गोत्रबलि ' की माँग में जीभ बढ़ायी ।

उधर से गुज़रे एक आदमी को

छोटी रब्बी ने 'विप्लवगुंड़ा ' पुकारा ।

मैंने विश्वास दिलाया कि इस-

खून में मेरा कोई हाथ नहीं ।

रब्बी ने मेरी ओर आँख तरेरकर-

यों बड़बडाया - " रे,मानव की संतान !!"

खून की प्यास मिटाने के वास्ते

रक्तरंजित मिट्टी पुकार रही है ।

पीड़ित गलियाँ और भी.....और भी....

की रट लगाकर गालियाँ दे रही हैं ।

रब्बी , हम चलें ।

सात

अंतरिक्ष में छाये हुए धुएँ का निरीक्षणार्थ

हम प्रायः शहर आया-जाया करते रहे ।

कभी तो मेरे शब्दों से या कभी तो

रब्बी के अधराग्र से खून टपकता रहा ।

“रब्बी, क्या तू आज भी मगर के आखेट पर गयी नहीं? “-

कहकर जब मैंने उसकी हँसी उड़ायी तो वापस उसने भी

“ किस सुअर-गोश्त पर आपकी अहिंसा का अवसान होगा ? “

कहकर मेरी भी हँसी उड़ायी।

हमारे ठिठोलियापन के बीच

दोनों खून थूकते रहे ।

गाँववालों ने जताया कि

शहर से एक औरत

भीख माँगती आ रही है ।

हरेक ने निद्राचारियों-सा

उसके गोत्रवाद्य का पीछा किया ।

उनमें से कुछ लौट न आये ।

कुछ उनके मकबरों का पता लगा सके ।

और कुछ युवागण औरत की खोज में घूमते फ़िरे ।

कुछ दिनों बाद वे घुमक्कट अवधूतों-सा

गाड़ी के गंदे ड़िब्बे द्वारा देश छूटे ।

निर्जन घरों से साँप के अंड़े

चुनकर लौट आते समय

रात की फ़ीकी रोशनी में

हमने उस औरत से मिला ।

मैंने घुटनों बैठके गुंजा, अंड़ा

तथा केला उसे भेंट दी ।

फ़िर उसका साष्टांग-नमस्कार किया ।

रब्बी ने मेरी जाँघ पर खरोंचा ।

औरत ने अपनी झोली से

वो प्राचीन तंत्रीवाद्य बाहर निकाला ।

आखें अर्धनिमीलित कर अपनी ऊँगलियों से

धीमी से सुर मिलाकर उस

लाल सड़क पर उसने गीत जगाया.....

तारे जाज्वल्यपुर्ण जगमगाये ।

जंगली-फ़ूल एकसाथ खिल उठे ।

रब्बी बकवास के साथ गिर पड़ी

अंड़े से सर्प-शिशु रेंगते रहे.....

“सारे जीवजन्तु अपने-अपने सहज संगीत के साथ जनम लेते हैं ।

लेकिन, कुछ ही लोग अपने निधन के ठीक पहले मात्र वह संगीत सुन सकते हैं ।

जब वह तंत्री बजाती है तब तेरे अंदर संगीत जाग उठता है ।

यह कैसा इंन्द्रजाल ! एक जादू के बगैर मृत्यु और क्या है !! "-

रब्बी फ़ुसफ़ुसाती रही.....

रहमदिल से मैंने उसकी ओर देखा ।

वह अपने घुँघरु उतारकर कराहती हुई भाग गयी.....

आठ

छोटी रब्बी कहीं से एक

भेंगा मोरपंख ले आयी है ।

उसे वह काट-खरोंचकर

चोट लगाती रहती है ।

सो मैंने झट-से उसे छीन लेके

किताब के अन्दर छिपाया ।

कुछ निर्दयी समालोचकों जैसे रब्बी ने

मेरी राजनीतिक कविताएँ काट-फ़ाड़ी ।

रब्बी, "उसमें सिपाहियों तथा किसानों पर

लिखी हुई कविताएँ भी हैं ।

तू मुझपर ज़रा दया दिखाओ!

सिर्फ निधनोपरान्त मात्र एक

कवि का सम्मान करती इस जनता-सी

मुझसे उपेक्षा का व्यवहार मत करो।"

तदंतर वह मेरी

प्रणय कविताओं की खोज करने लगी.....

आवारे कुत्तों जैसा विरह से पीड़ित

मेरा हृदय ; प्रतिबंधित वही काव्य ।

एक सिसकी के साथ उन काव्यों पर

होंठ मिलाती हुई वह आँसु बहाने लगी ।

उस भेंगे मोरपंख की प्रसूति हो चुकी ।

झाड़ी में लेटकर

सूरज की ओर ताकते हुए मैं रोया ।

मेरी गायें एक नवजात शिशु-सी मुझे चाटती रहीं ।

रब्बी -

अपनी नन्ही गुड़िया लेकर

एक गुप्तचर की तरह कहाँ जा रही है !

हर वापसी पर वह अपनी नन्ही गुड़िया को

एक भी चोट पहुँचाये बिना लौट ले आ रही है ।

नौ

रेड़ियो लड़ाई के समाचार गुर्रा रही है ;

'पलस्तीन-इस्रैल,भारत-पाकिस्तान,

सुड़ान,उक्राइन-रूस..... '

देहात में बचे-खुचे लोगों के लिए

इसकी कोई जानकारी नहीं थी ।

उनके लिए युद्ध -

केवल टमाटर, हरी मिर्च आदि

नित्योपयोगी चीज़ों के

दाम बढ़ाने का कारण मात्र था !

महंगाई पर रेड़ियो भले ही खामोश है ।

लेकिन, युद्ध में सर्वनाश हुए देशों पर

कहानियाँ गढ़ने पर रेड़ियो आगे थी ।

वह गाथाएँ गढ़ती रही.....

माँ की शिकायत केवल

चावल और मिट्टी का तेल

उपलब्ध न होने पर मात्र टिकी थी ।

कभी तो हम कच्चा चावल

भिगोकर भी खाया करने लगे.....

रेशन-कार्ड से

मृतकों के नाम मिटाने के बगैर

हमारी सरकार ने अपने नागरिकों के लिए

कुछ और नहीं किया था ।

देश की हालत

ईसा को पृथक बनाये

क्रूस की तरह टूट गयी ।

भूख लगने पर रब्बी पूँछ काटती हुई

गद्दी पर ' यिंग याँग '-सी लेटी ।

बीच-बीच में वह मेरी छाती दबाकर

दूध निचोड़ने की कोशिश करती रही ।

रब्बी , ध्यान रखना कि मैं एक जंगल नहीं हूँ !

रसोई में पेशाब करने की उसकी आदत

और इसपर माँ की डाँट कभी रुकी ही नहीं ।

हे चमत्कारों में भरोसा न रखनेवाली,

तेरी दुआ में मत्स्य-वर्षा हो रही है !

दस

रब्बी,

तेरी पूँछ की गतिशीलता से मैंने न्याय सीखा।

तेरे चार पैरोंवाले गिरावट की विद्या से वैशेषिक

तथा व्यतिरिक्त दिनचर्याओं से सांख्य एवं

अंगड़ाईपन से योगविद्या का ज्ञान पा लिया ।

तेरी व्यतिरेकी करनियों से मीमांसा

तथा चिरस्थायी प्यार से वेदांत

का भी दर्शन पाकर मैं धन्य हुआ !

तेरी चाहतों की चिड़िमार-क्षमता

एवं सतर्क नींद से बुद्ध भाव तथा

मुक्त व लौकिक तुझ में निहित जिनत्व,

दूर हटकर सूखी मछली खाती

तुझ में स्थित चारवाक भाव को भी

मैंने भलीभांति कंठस्थ किया ।

तेरी अभिव्यक्तियों से नाट्यशास्त्र

चाल-ढ़ालों से काव्यशास्त्र

आवाज़ों से व्याकरण

विष्ठा छिपाते समाजशास्त्र

घास खाते चिकित्साशास्त्र

दुश्मन को चकनाचूर करते युद्धतंत्र

चाट-पोंछवाली स्वच्छता भी

मैं सही अर्थ में जान पा सका ।

ग्यारह

प्यारी रब्बी,

अब मुझे बिदा दो.....

उस बूँदाबाँदी में

वह मेरे पैरों में चाटती रही ।

उसे अपनी बाँहों समेटकर मैंने

उसके गर्दन पर रगड़ा

और माथे पर चूम लिया ।

रब्बी, मुझे अपना प्यार वापस लेना है ।

पसली के उस सुमन को अधरों लगाना है ।

यह अधूरापन मैं तूलिका से भर नहीं सकता ।

आगे फिर कभी कोई वापसी चाहे न हो ।

उदासी क्षणों में ,

पूरी लगन से ज़रा इस पर एक काव्य रचें

कि मानव दूसरों से प्यार कैसे कर सकें ।

*छोटे गुरु

अपनी कविताओं की बहु-स्तरीयता के कारण डा.रतीष कृष्णा मलयालम काव्य साहित्य के जाने-माने युवा कवि हैं। सोश्यलमीड़िया पर भी उनकी कविताएं बहुचर्चित हैं । आपकी कविताएं जीवन की समग्रता में व्याप्त जटिलता को बखूबी प्रदर्शित करती है । कवि के अद्भुत बिंब निर्माण से कविताओं का शिल्प सौंदर्य उल्लेखनीय है। फ़िलहाल बंगाल में श्रीमति नीलांजना दास द्वारा अनूदित इनका 'हात् रोश ' नामक काव्य पुस्तक बहुचर्चित है । बहुत ही कम समय में उसका तीसरा एड़िशन हो चुका है। ' छोटी रब्बी ' को लेकर मलयाली पाठकों के बीच बड़ी चर्चाएं संपन्न हुई है । इसके अनुवाद करने का भी यही एक मुख्य प्रेरणा है ।